गुरु नानक – सबद ४

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥

सार: गुरु नानक अस्तित्व को नियंत्रित करने वाले प्रकृति के नियम को संदर्भित करने के लिए 'हुकुम' शब्द का इस्तेमाल करते हैं। सृष्टि के सभी रूप सर्वव्यापी चेतना के स्वरुप हैं, जो अपनी इच्छा और सहमति के अनुसार आकार लेते हैं । यह शहद की मिठास, पानी की तरलता या फूल की ख़ुश्बू की तरह हैं, जो दृश्य पदार्थों के अदृश्य अभिन्न गुण हैं।

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥
सर्वव्यापी चेतना, अपने हुकुम से भौतिक शारीरिक रूप लेने का निर्णय करती है; यह नियम समझाने योग्य नहीं है।

हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥
सर्वव्यापी चेतना अपने हुकुम से जीवन का निर्माण करने का निर्णय लेती है और इस प्रकार क्रम के माध्यम से उसे मान्यता मिलती है।

हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥
सर्वव्यापी चेतना अपने हुकुम से ऊंचा होने या पस्ती में गिरने का निर्णय करती है; ये चुनाव खुशी या दुःख देता है।

इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥
सर्वव्यापी चेतना अपने हुकुम से दयापूर्ण हालत में रहने का या भटकने का निर्णय करती है।

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
सर्वव्यापी चेतना का हुकुम ही सब करने वाली शक्ति है, और इस नियम के बाहर कुछ भी नहीं है।

नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥
नानक कहते हैं कि अगर इस नियम को समझ लिया जाए, तो बाक़ी दूसरे रूपों को अजनबी तौर से देखने से जुड़ा अहंकार ख़त्म हो जाता है। (२)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि ब्रह्मांडीय नियमों के स्रोत को समझना जो प्रकृति के बाहरी और आंतरिक पहलुओं को नियंत्रित करता है, सद्भाव के लिए महत्वपूर्ण है। जब प्रकृति के इन नियमों की पुष्टि करना स्वीकार्य हो जाता है, तो आप और मैं, उच्च या निम्न, बड़े या छोटे, दर्द या खुशी की कोई धारणा नहीं रहती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com